

पद १७०

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

सूरत खूब अजब दरसायो। राजा चेतन हर घट अपनी॥ध्रु॥
सताकास चित्प्रकास प्रिय नित आतम ज्ञान ज्योती। कुदरत से
तन महल बनाकर घट घट आँख (नेत्र) बसायो॥१॥ ज्ञानी बन
मुगति पद पधारे अज्ञानी बन षंडा। खेल खेल पट खोल खड़ा
तब नहीं मूरख नहीं पण्डा॥२॥ एकहि प्रेम प्रभाव नचावत नाचे
मरद लुगाई। नाता गोता करम धरम सुध। मूरख मन समझाई॥३॥
सुख कारन तुम सृष्टि मचाई भूल परत संसारा। वेद भाट तुमही
को रिझाने महावाक्य ललकारा॥४॥ आपहि अनंत मतधारी बन
भटकत अजब तमासा। दीनदुःखहर श्रीप्रभु आपहि चिन्मार्ताण्ड
प्रकासा॥४॥